जब ओखली में सिर दिया, तो मूसलों से क्या डरना?

- ब्र.कु. सुमन,लखनऊ

जब ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डरना? कहने का तात्पर्य है कि जिस लक्ष्य को हमने लिया है, उसको प्राप्त करने के लिए जो ज़िम्मेदारी ली है, या मिली है, उसमें आने वाली परिस्थितियों में निर्भीक होकर चलते जाना। व्यवस्था या प्रशासन को बिना दोषी बनाये अपने पथ पर मंज़िल प्राप्त करने के लिए खुशी से चलते जाना।

ओखली कहा ही जाता है जहाँ मूसलों का वार होना ही है, अर्थात् ओखली बनी ही है मूसलों के वार के लिए। बिना मूसलों के वार के ओखली की कोई सार्थकता नहीं। ओखली के प्राय: तीन कार्य होते हैं, किसी चीज़ को रिफाइन करना, चमकदार बनाना और महीन करना। ओखली में ऐसे ही मूसल नहीं पड़ते, पर जब कोई वस्तु को इन तीनों में से कोई भी प्रक्रिया से गुज़ारना हो तो ही मूसलों का वार होता है। इसी प्रकार संसार में भी जिसने कुछ धारा से अलग अर्थात् श्रेष्ठ, शुभ या नवीन कार्य करना चाहा, तो परीक्षाओं के हैमर तो लगने ही हैं। जिसने भी ओखली में सिर दिया, उसको अगर ये बात पता होती है, अर्थात् वह अनुभवी होता है तो वह अपनी दृढ़ता एवं हिम्मत के साथ अनेक वारों को सहन करता हुआ निरंतर आगे की ओर चलता जाता है। ना ही किसी से शिकायत, ना ही वापस लौटने का संकल्प।

बहादुर रणभूमि में कभी पीठ नहीं दिखाता, खेत रह जाता है पर कायर नहीं बनता। धान जब ओखली में पड़ता है तो चावल बनकर निकलता है, और गेहूँ को जब ओखली में डालकर उसका छिलका उतारा जाता है तो उसमें शाइनिंग आ जाती है, जबकि साधारणतया लोग गेहूँ के छिलके से अनभिज्ञ ही रहते हैं। जब ओखली में चीज़ पड़ती है तो मूसलों के वार करने के लिए ही पड़ती है, तब यह सोचना कि मूसलों से बच जायें, असंभव है। इसी प्रकार जब हमने संसार में विकारों की आग में जल रहे जनमानस को बचाने की मुहिम में पदार्पण कर ही लिया है तो थोड़ा बहुत तो सेक आयेगा ही, उससे क्या डरना? जब पवित्रता के पथ पर चल ही पड़े हैं तो अपने ही 63 जन्मों के संस्कारों के साथ समाज की अवहेलना एवं छींटाकसी तो सुननी ही पड़ेगी।

चाहे नवनिर्माण या नवीनीकरण, दोनों के लिए धीरज एवं सहन करने की शक्ति, इन दो शक्तियों की अत्यधिक आवश्यकता होगी ही होगी। लेकिन हमें इस बात का गर्व होना चाहिए कि हम एक नेक काम ही नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक नये समाज की स्थापना कर रहे हैं, तो हमें क्या-क्या करना पड़ रहा है व कितना सहन करना पड़ रहा है इसकी क्या फिकर! जब किसी धर्म स्थापक ने संसार की पीड़ा को देखकर अपनी अंतस की आवाज़ को सुनकर एक नवीन विचारधारा से जनमानस के ज़ख्मों पर कुछ मरहम लगाने की कोशिश की तो संसार से उन्हें अनेक दर्द व वेदनायें ही मिलीं, लेकिन वे इन बातों को रास्ते की बाधा मानकर रुके नहीं, बल्कि उनकी लगन और बढ़ गयी और संसार से विरक्ति का माध्यम बनी, और अंत में जितना वे इन चीज़ों से बेपरवाह हो चलते चले, उतना ही उनकी मत को मज़बूती मिली और उन्हें प्रसिद्धि।

इसी प्रकार ब्रह्मा बाप भी जैसे ही परमात्म श्रीमत का अनुसरण कर, उसकी मत पर चले तो सारा संसार न सिर्फ एक तरफ हो गया, बल्कि अपने भी पराये बनकर परीक्षाओं को समस्या बनाकर सामना करने के लिए खड़े हो गये। समाज या समाज के मनुष्यों की क्या बात करें, स्वयं का शरीर भी चुनौती दे रहा था, पर बाबा ने एक संकल्प भी निगेटिव नहीं चलने दिया। दादियों को ही देखें, जिन्होंने बचपन क्या राजसी ठाठ में बिताया, और भगवान का बनते ही वही परिवार एवं सगे सम्बन्धी दुर्वव्यवहार करने लगे। पर कोमल मन पर एक भी कमज़ोरी व निराशा का संकल्प नहीं ला पाये, और जब संसार के कर्मक्षेत्र पर निकलीं तो संसार में धर्मावलम्बियों ने हर हथकंडे अपनाये, पर जिस नारी को अबला समझ वे ठग कर मूर्ख बनाने चले थे, उन्हीं शिव-शक्तियों की दृढ़ता एवं निश्चय के आगे हार खाते रहे। राजकुमारों की तरह जीवन जीने वालों को जब ढ़ोढ़ा(बाजरे की रोटी)और छाछ से पेट भरना पड़ा, तब भी वे उसी मौलाई मस्ती की खुमारी में रह 36 प्रकार के व्यंजनों के समान ही खुशी में मस्त रहे। यज्ञ की बेगरी लाइफ में भी जीवन जीने का आनंद लेते रहे, स्वप्न में भी चुनौतियों से भागने का संकल्प नहीं आया। जब आपने भी इस पथ को अपना ही लिया है, बी.के. बन ही गये, तो अब बार-बार पीछे मुड़कर क्या देखना! संसार के साधन-सुविधाओं का क्या आकर्षण! धन और पद के बारे में क्या सोचना! अब चाहे लौकिक हो या अलौकिक, चाहे प्रकृति हो या स्वभाव संस्कार, चाहे बीमारी हो या परिस्थिति, चाहे भौतिकता हो या आधुनिकता, चाहे कोई भी समस्याओं रूपी मूसल आये, पर हमें डरकर पथ भ्रमित नहीं होना है। हम वो नहीं जो साँचे में ढ़ल गये, हम वो हैं जो साँचे बदल गये। हम उस संस्कृति के रहवासी हैं जहाँ कहावत है कि प्राण जाये पर वचन न जाये। जैसे राजा हरीशचन्द्र का उदाहरण हमने सुना है कि उसने स्वप्न में कह दिया तो कह दिया, फिर जीवन में कितनी भी विषम परिस्थितियाँ आयीं, पर पीछे मुड़कर नहीं देखा और अंत में विजय उसी की होती है। उसी दृढ़ता एवं निर्भयता के कारण आज सत्य हरीशचन्द्र के नाम का पर्याय बना।

सड़क कहीं नहीं जाती है, पर कितने सारे लोग उस पर चलकर अपनी मंज़िल पर पहुँचते हैं। हम जो निर्माण कर रहे हैं, उससे कितनों का पथ सरल हो जायेगा। हमें पता है, जब दुश्मन मरने पर होता है तब वह अपने हर फन का प्रयोग करता है। इसी प्रकार हम रावण राज्य में राम राज्य का निर्माण कर रहे हैं, तो रावण अपने हर शस्त्र का प्रयोग तो करेगा ही, पर हम भी सर्वशक्तिवान, सत्य पिता की संतान हैं। हम अपनी पवित्रता रूपी अनमोल निधि को किसी भी हालत में हिलने नहीं देंगे। परमात्मा ने अपने आश्रय में लेकर, आश्रम में रख हमें ऋषिकुमार बना दिया, अब इस जीवन को अपनी तपस्या की अग्नि से सनत कुमार बनाकर सारे जहान को रावण के चंगुल से मुक्त करायेंगे, स्वतंत्र बनाकर ही छोड़ेंगे। ये कार्य अब हमारा लक्ष्य, उद्देश्य, मंज़िल, स्वप्न, जीवन ही हो गया है। इसके लिए हमें कुछ भी सहन करना पड़े, हम खुशी-खुशी तैयार हैं।इस अश्वमेध यज्ञ की रक्षा करने के लिए, चाहे ध्रुव की तरह तपस्या करनी पड़े या मीरा की तरह ज़हर पीना पड़े या सीता की तरह अग्नि परीक्षा देनी पड़े तो भी हम हँसते-हँसते तैयार हैं। कैसी भी परीक्षायें आयें, उसमें पास ही नहीं, बल्कि पास विद् ऑनर होके ही दिखायेंगे। जब ओखली में सिर दे ही दिया है तो मूसलों से डरना क्या!

ओखली के प्राय: तीन कार्य होते हैं, किसी चीज़ को रिफाइन करना, चमकदार बनाना और महीन करना। ओखली में ऐसे ही मूसल नहीं पड़ते, पर जब कोई वस्तु को इन तीनों में से कोई भी प्रक्रिया से गुज़ारना हो तो ही मूसलों का वार होता है। इसी प्रकार संसार में भी जिसने कुछ धारा से अलग अर्थात् श्रेष्ठ, शुभ या नवीन कार्य करना चाहा, तो परीक्षाओं के हैमर तो लगने ही हैं। जब किसी धर्म स्थापक ने संसार की पीड़ा को देखकर अपनी अंतस की आवाज़ को सुनकर एक नवीन विचारधारा से जनमानस के ज़ख्मों पर कुछ मरहम लगाने की कोशिश की तो संसार से उन्हें अनेक दर्द व वेदनायें ही मिलीं, लेकिन वे इन बातों को रास्ते की बाधा मानकर रुके नहीं।

बरेली-बजरिया पूरनमल। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना के अंतर्गत आयोजित विकास खण्ड गोष्ठी में ग्राम विकास प्रदर्शनी समझाते हुए ब्र.कु. रजनी। साथ हैं ब्र.कु. कौशलेन्द्र तथा अन्य।

जयपुर-कांजी नगर। विधान सभा अध्यक्ष कैलाश चन्द्र मेघवाल को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सन्नु।

जहानाबाद-बिहार। चैतन्य देवियों की झाँकी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए डी.एस.पी. जयराम शर्मा तथा ब्र.कु. मंजु।

उन्नाव-उ.प्र। 'राजयोग द्वारा तनावमुक्त जीवन व शान्ति की गहन अनुभूति' विषयक कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए जिलाधिकारी सुरेन्द्र सिंह, कृषि निदेशक विनय प्रकाश श्रीवास्तव, चेयरमैन रामचन्द्र वर्मा, विश्व हिन्दू परिषद विभागाध्यक्ष, ब्र.कु. शारदा, ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. अर्चना तथा अन्य।